

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

प्रोफेसर चेस लाडुसा द्वारा 'मदर टंग एंड इंग्लिश' पर व्याख्यान

नई दिल्ली: 24 जुलाई, 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शिक्षा संकाय के शैक्षिक अध्ययन विभाग ने अपने पोस्ट-ग्रेजुएट एजुकेशन एसोसिएशन (PGEA) और DES थ्योरी-प्रेक्टिस कनेक्ट के सहयोग से, 23 जुलाई 2026 को सुबह 11:40 बजे शैक्षिक अध्ययन विभाग के सेमिनार हॉल में "मातृभाषा और अंग्रेज़ी" विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया।

इस व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और संकाय सदस्यों को बहुभाषी समाजों और समकालीन शैक्षिक नीतियों के दायरे में मातृभाषा-आधारित शिक्षा और अंग्रेज़ी भाषा सीखने के बीच के संबंध की गहरी समझ प्रदान करना था। इसका उद्देश्य भारतीय संदर्भ में भाषा, पहचान, समानता और शैक्षिक अवसरों पर सार्थक शैक्षणिक बातचीत को बढ़ावा देना भी था।

कार्यक्रम की शुरुआत शोधार्थी श्री ताज मोहम्मद द्वारा पवित्र कुरान के पाठ के साथ हुई, जिसके बाद M.Ed. के छात्र श्री अज़हर अहमद ने स्वागत भाषण दिया। अपने स्वागत भाषण में, उन्होंने इस विषय के महत्व पर प्रकाश डाला, जो बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग की वकालत करता है।

मुख्य व्याख्यान हैमिल्टन कॉलेज, न्यूयॉर्क, USA में मानव विज्ञान के प्रोफेसर और अध्यक्ष तथा शैक्षिक अध्ययन के निदेशक प्रोफेसर चेस लाडुसा द्वारा दिया गया। प्रोफेसर लाडुसा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित विद्वान हैं, जिनका शोध भाषा, शिक्षा, सामाजिक वर्ग और राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर केंद्रित है, और उन्होंने उत्तर भारत में व्यापक नृवंशविज्ञान संबंधी फील्डवर्क किया है।

अपने बेहद दिलचस्प व्याख्यान में, प्रोफेसर लाडुसा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषा संचार के माध्यम से कहीं अधिक है; यह पहचान, संस्कृति, सामाजिक गतिशीलता और शैक्षिक अनुभवों से गहराई से जुड़ी हुई है। भारत में अपने लंबे समय के नृवंशविज्ञान संबंधी शोध के आधार पर, उन्होंने समझाया कि कैसे मातृभाषा और अंग्रेज़ी के बीच माना जाने वाला अंतर अक्सर भाषाई वास्तविकताओं के बजाय व्यापक सामाजिक आकांक्षाओं और असमानताओं को दर्शाता है। उन्होंने तर्क दिया कि बहुभाषावाद को एक चुनौती के बजाय एक शैक्षिक संपत्ति के रूप में देखा जाना चाहिए और शिक्षकों को ऐसे लर्निंग के माहौल बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जहाँ छात्रों की घरेलू भाषाओं का सम्मान किया जाए और उन्हें कक्षा की गतिविधियों में सार्थक रूप से शामिल किया जाए। उनके व्याख्यान ने समावेशी, न्यायपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने में भाषा की भूमिका पर विचार-मंथन को प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम को 'डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज़' के पूर्व हेड, प्रोफेसर अरशद इकराम अहमद के विशेष संबोधन ने और भी समृद्ध बनाया। प्रोफेसर अहमद ने संज्ञानात्मक विकास, वैचारिक समझ और

भावनात्मक विकास में मातृभाषा की अहम भूमिका पर ज़ोर दिया। भाषा शिक्षा, बहुभाषी शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम विकास में अपने व्यापक योगदान का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने देश की समृद्ध भाषाई विविधता को पहचानते हुए भारतीय भाषाओं को मज़बूत करने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने इस लेक्चर की प्रासंगिकता की सराहना की और शिक्षक शिक्षा में बहुभाषी शिक्षण विधियों को लागू करने के महत्व पर ज़ोर दिया।

इस सत्र की अध्यक्षता 'डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज़' के प्रोफ़ेसर और हेड, प्रोफ़ेसर एजाज़ मसीह ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में, प्रोफ़ेसर मसीह ने ज्ञानवर्धक चर्चाओं की सराहना की और कहा कि भाषा शिक्षा को मातृभाषा और अंग्रेज़ी के बीच प्रतियोगिता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि एक ऐसी पूरक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जो सीखने वालों को बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती है। भारत की भाषाई विविधता पर विचार करते हुए, उन्होंने कहा कि भारतीय संदर्भ में अपनी मातृभाषा को परिभाषित करना अक्सर एक जटिल काम होता है। उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव के साथ अपने अनुभवों का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने भाषा की गतिशील और विकसित होती प्रकृति पर प्रकाश डाला।

इस लेक्चर में 'डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज़' और IASE के फैकल्टी सदस्यों, रिसर्च स्कॉलर्स और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इंटरैक्टिव सवाल-जवाब सत्र में बहुभाषावाद, मातृभाषा की भूमिका, क्षेत्रीय भाषाओं और भाषा नीति से जुड़े मुद्दों में प्रतिभागियों की गहरी रुचि दिखाई दी। प्रोफ़ेसर लाडुसा ने बहुत स्पष्टता और विद्वतापूर्ण समझ के साथ सवालों के जवाब दिए, जिससे बातचीत बेहद दिलचस्प और बौद्धिक रूप से प्रेरक बन गई।

कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अफ़ाक नदीम खान द्वारा औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने प्रोफ़ेसर चेज़ लाडुसा का उनके प्रेरक और विचारोत्तेजक लेक्चर के लिए, प्रोफ़ेसर एजाज़ मसीह का सत्र की अध्यक्षता करने और अपने अध्यक्षीय संबोधन के लिए, और प्रोफ़ेसर अरशद इकराम अहमद का उनकी बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और विशेष संबोधन के लिए दिल से आभार व्यक्त किया। उन्होंने फैकल्टी सदस्यों, छात्रों और आयोजन टीम के सहयोग को भी सराहा। DES थ्योरी-प्रैक्टिस कनेक्ट के संयोजक डॉ. मो. जावेद हुसैन की विशेष सराहना की गई, जिनकी बेहतरीन योजना और लगातार सहयोग ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस कार्यक्रम का संचालन सुश्री अफ़रीन फ़ातिमा और श्री अज़हर अहमद ने बहुत अच्छे ढंग से किया।

इस एक्सटेंशन लेक्चर ने आज की शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा और अंग्रेज़ी के बीच के रिश्ते पर गंभीरता से सोचने के लिए एक बेहतरीन शैक्षणिक मंच प्रदान किया। इसने बहुभाषिता, भाषाई विविधता और समावेशी शिक्षा के तरीकों के महत्व को रेखांकित किया और प्रतिभागियों को भाषा को एक ऐसे पुल के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया जो संस्कृतियों, समुदायों, ज्ञान प्रणालियों और अवसरों को जोड़ता है। कार्यक्रम का समापन बहुत सकारात्मक रहा और इसने प्रतिभागियों को एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में भाषा के शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी